सिंहासन बत्तीसी

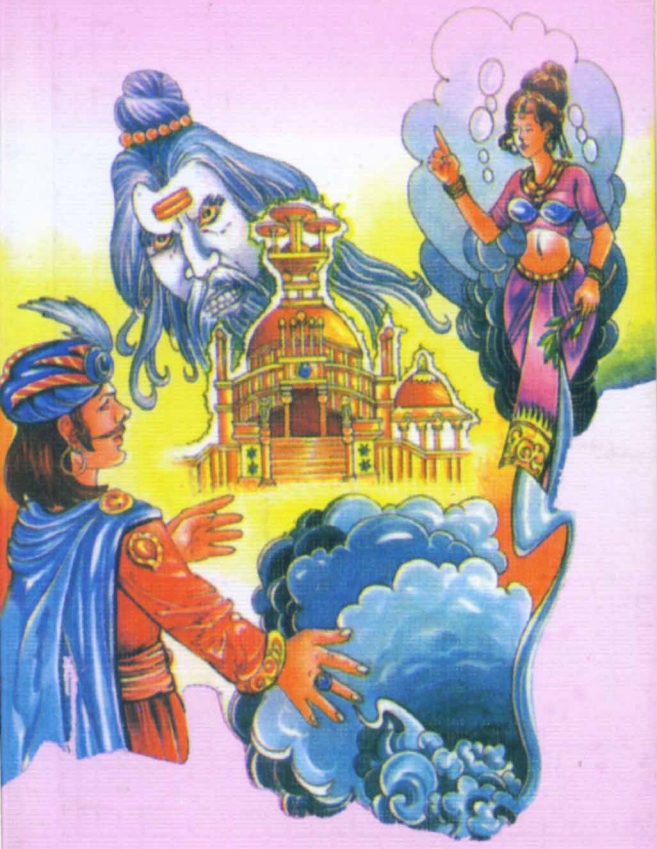

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

सिंहासन बत्तीसी

प्रस्तुति

गंगाप्रसाद शर्मा

प्रकाशक

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

F-2/16, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002

☎ 23240026, 23240027 • *फैक्स:* 011-23240028

E-mail: info@vspublishers.com • *Website:* www.vspublishers.com

शाखाः हैदराबाद

5-1-707/1, ब्रिज भवन (सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया लेन के पास)

बैंक स्ट्रीट, कोटी, हैदराबाद - 500 095

☎ 040-24737290

E-mail: vspublishershyd@gmail.com

शाखा : मुम्बई

जयवंत इंडस्ट्रिअल इस्टेट, 1st फ्लोर - 108,

तारदेव रोड अपोजिट सोबो सेन्ट्रल मॉल, मुम्बई - 400 043

☎ 022-23510736

E-mail: vspublishersmum@gmail.com

फ़ॉलो करें:

© कॉपीराइट: वी एण्ड एस पब्लिशर्स

ISBN 978-93-521518-0-6

DISCLAIMER

इस पुस्तक में सटीक समय पर जानकारी उपलब्ध कराने का हर संभव प्रयास किया गया है। पुस्तक में संभावित त्रुटियों के लिए लेखक और प्रकाशक किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होंगे। पुस्तक में प्रदान की गयी पाठ्य सामग्रियों की व्यापकता या सम्पूर्णता के लिए लेखक या प्रकाशक किसी प्रकार की वारंटी नहीं देते हैं।

पुस्तक में प्रदान की गयी सभी सामग्रियों को व्यावसायिक मार्गदर्शन के तहत सरल बनाया गया है। किसी भी प्रकार के उद्धरण या अतिरिक्त जानकारी के स्रोत के रूप में किसी संगठन या वेबसाइट के उल्लेखों का लेखक या प्रकाशक समर्थन नहीं करता है। यह भी संभव है कि पुस्तक के प्रकाशन के दौरान उद्धृत बेवसाइट हटा दी गयी हो।

इस पुस्तक में उल्लिखित विशेषज्ञ के राय का उपयोग करने का परिणाम लेखक और प्रकाशक के नियंत्रण से हटकर पाठक की परिस्थितियों और कारकों पर पूरी तरह निर्भर करेगा।

पुस्तक में दिये गये विचारों को आजमाने से पूर्व किसी विशेषज्ञ से सलाह लेना आवश्यक है। पाठक पुस्तक को पढ़ने से उत्पन्न कारकों के लिए पाठक स्वयं पूर्ण रूप से जिम्मेदार समझा जायेगा।

उचित मार्गदर्शन के लिए पुस्तक को माता-पिता एवं अभिभावक की निगरानी में पढ़ने की सलाह दी जाती है। इस पुस्तक के खरीददार स्वयं इसमें दिये गये सामग्रियों और जानकारी के उपयोग के लिए सम्पूर्ण जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं। इस पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री का कॉपीराइट लेखक/प्रकाशक के पास रहेगा। कवर डिजाइन, टेक्स्ट या चित्रों का किसी भी प्रकार का उल्लंघन किसी इकाई द्वारा किसी भी रूप में कानूनी कार्रवाई को आमंत्रित करेगा और इसके परिणामों के लिए जिम्मेदार समझा जायेगा।

विषय सूची

कहानी का आरंभ 5
1. देवताओं का सिंहासन 12
2. काली मां का वरदान..... 17
3. कौन छोटा, कौन बड़ा ?..... 21
4. चमत्कारी खंभा 25
5. स्वर्ण महल का दान 28
6. जीवन का मूल्य 33
7. अन्नपूर्णा का दान 36
8. लकड़ी का घोड़ा 40
9. स्वर्णमुद्राओं का दान..... 44
10. स्वयंवर राजकन्या का 47
11. समुद्र का उपहार..... 51
12. शाप से मुक्ति..... 54
13. सबसे बड़ा दानी..... 58
14. कापालिक और बेताल..... 63
15. अनोखा दान..... 67
16. चमत्कारी रत्न..... 71
17. शिव का वरदान 74
18. विश्वासघात 77
19. चमत्कारी खड़िया 83
20. अधूरा ज्ञान..... 86
21. कुलपुरोहित को जीवन-दान..... 90
22. भाग्य का लेख 92
23. रक्त कमल..... 95
24. त्रिया चरित्र..... 98
25. कन्यादान..... 103
26. देवराज इंद्र द्वारा सम्मान..... 105
27. दैत्यराज बलि से भेंट 107
28. सोने का महल 110
29. चार अपराधी..... 114
30. शापग्रस्त ब्राह्मण 118
31. मोह भंग 120
32. राजा भोज का निर्णय 123

कहानी का आरंभ

यह कहानी उस समय की है, जब उज्जैन में राजा भोज राज करते थे। राजा भोज सही अर्थों में एक आदर्श राजा थे। वे अपनी प्रजा के सुख-दुख का बहुत ख्याल रखते थे। प्रजापालक होने के साथ-साथ वे महान पराक्रमी, धर्मात्मा, दानवीर एवं न्यायप्रिय थे। समस्त आर्यावर्त में उनकी न्यायप्रियता की चर्चा फैली हुई थी।

एक दिन एक ब्राह्मण उनके दरबार में पहुंचा। उसके साथ उसकी पत्नी और एक मित्र भी था। राजा भोज ने उस ब्राह्मण से दरबार में आने का कारण पूछा तो उसने अपने मित्र की ओर संकेत करके बताया - 'धर्मावतार। मुझे अपने इस मित्र के कुकृत्य के कारण यहां आना पड़ा है। मेरा यह मित्र रत्न-आभूषणों का व्यापारी है। गत वर्ष जब मैं विदेश यात्रा पर गया था तो इसके पास अपने तीन बहुमूल्य रत्न अमानत के रूप में रख गया था। जब वापस लौटकर मैंने अपने रत्न मांगे तो यह देने से इंकार करता है। मैं एक निर्धन ब्राह्मण हूं। वे रत्न मेरे बुढ़ापे का सहारा हैं। मेरे साथ न्याय कीजिए और मेरे रत्न इससे दिलवाइए।'

राजा भोज ने ब्राह्मण की बातें धैर्यपूर्वक सुनीं। फिर उस व्यापारी से पूछा - 'व्यापारी, क्या ब्राह्मण का आरोप सही है?'

'नहीं दयानिधान।' व्यापारी ने कहा - 'यह सही है कि इसने मुझे तीन रत्न रखने को दिए थे किंतु जब यह निर्धारित अवधि तक वापस न लौटा तो मैंने वे रत्न इसकी पत्नी को लौटा दिए थे। इसका यह आरोप सरासर गलत है कि मैं इसकी अमानत को दबा गया हूँ।'

तब राजा ने ब्राह्मण की पत्नी से पूछा - 'क्यों बहन? क्या इस व्यापारी ने तुम्हें वे रत्न लौटा दिए थे?

'नहीं महाराज।' ब्राह्मण की पत्नी बोली - 'यह बिल्कुल झूठ बोलता है। मैंने तो अपने पति के विदेश जाने के बाद आज ही इसकी शक्ल देखी है।'

सच्चाई जानने के लिए राजा ने व्यापारी से पूछा - 'तुम कोई साक्षी प्रस्तुत कर सकते हो जिसकी उपस्थिति में तुमने वे रत्न लौटाए थे?'

'अवश्य दयानिधान। मैंने गांव के मुखिया और मंदिर के पुजारी के सामने इन्हें तीनों रत्न लौटाए थे', व्यापारी ने उत्तर दिया।

राजा भोज ने सिपाही को भेजकर गांव के मुखिया और मंदिर के पुजारी को बुलवाया। उनसे पूछा गया तो उन्होंने भी व्यापारी के कथन की पुष्टि कर दी। यह सुनकर राजा भोज दुविधा में पड़ गए। उन्होंने काफी देर तक मनन किया, फिर अपना निर्णय सुना दिया - 'सारी बातें सुनने के बाद मैं इसी निर्णय पर पहुंचा हूं कि ब्राह्मण का आरोप झूठा है। इसकी पत्नी भी झूठ बोल रही है। मैं व्यापारी को आरोपमुक्त करता हूं और ब्राह्मण को चेतावनी देता हूं कि वह अपना आचरण सुधारे और भविष्य में किसी पर झूठा आरोप न लगाए।'

राजा भोज का निर्णय सुनकर ब्राह्मण के मन को भारी ठेस पहुंची। वह आहत स्वर में बोला - 'धर्मावतार, आपने मेरे साथ न्याय नहीं किया। मैं तो बड़ी आशा लेकर आपके पास आया था। आपने तो मुझको ही दोषी बना दिया। इससे तो अच्छा होता कि मैं निकट के गाँव के उस ग्वाले के पास चला जाता जो जंगल में एक टीले पर बैठकर लोगों के झगड़े सुनता और उनका निपटारा करता है।'

व्यापारी राजा भोज के निर्णय से उत्साहित था। वह ब्राह्मण से व्यंग्य भरे स्वर में बोला - 'यदि तुम्हें उस ग्वाले पर इतना ही विश्वास है तो उससे भी न्याय मांग कर देख लो। मैं वहां भी चलने को तैयार हूँ।' 'ठीक है। मैं उसी के पास जाकर न्याय मांगूंगा', ब्राह्मण ने क्रोध भरे स्वर में कहा और अपनी पत्नी के साथ वहां से चल पड़ा।

व्यापारी भी गांव के मुखिया और मंदिर के पुजारी को साथ लेकर उसके साथ चल दिया। उन सबके जाने के बाद राजा भोज ने अपने मंत्री वररुचि से पूछा - 'मंत्री जी, हमारे राज्य में ऐसा कौन-सा ग्वाला पैदा हो गया जिस पर राज्य के लोग हमसे भी ज्यादा विश्वास करने लगे हैं और जो हमसे भी ज्यादा न्यायशील है?' मंत्री वररुचि ने कहा - 'महाराज। मैंने उस ग्वाले को अभी तक देखा नहीं है, किंतु उसके बारे में सुना जरूर है। वह आपके राज्य के एक गांव का रहने वाला है। गांव के पास जंगल में मिट्टी का एक

ऊंचा टीला है। वह ग्वाला प्रतिदिन उस टीले पर बैठकर लोगों के झगड़े निबटाता है। उसके साथ दूसरे ग्वाले भी होते हैं जो उसकी आज्ञा का पालन करते हैं। उसका निर्णय इतना सटीक होता है कि लोग आंखे मूंद कर उसके निर्णय को स्वीकार कर लेते हैं।'

'तब तो हम कल ही उससे मिलने के लिए चलेंगे।' राजा भोज ने कहा- 'हम भेस बदलकर वहां पहुंचेंगे और देखेंगे कि वह ग्वाला कैसा न्याय करता है?' फिर अपने मंत्री को साथ चलने के लिए तैयार रहने का आदेश देकर वे अपने महल में चले गए। दरबार बरखास्त कर दिया गया। अगले दिन अपने कई पदाधिकारियों के साथ राजा भोज भेस बदल कर उस टीले के पास पहुंचे और गाँव के अन्य लोगों के मध्य चुपचाप खड़े हो गए। वह ब्राह्मण भी अपनी पत्नी और अपने मित्र के साथ वहां पहुंचा हुआ था। साथ ही उसके मित्र के दोनों गवाह भी मौजूद थे। तभी एक ग्वाला उस ऊंचे टीले पर आकर बैठ गया और फिर कड़कदार स्वर में बोला - 'जाओ। राजा भोज को बुलाकर लाओ। मैं उसे बताऊंगा कि न्याय किसे कहते हैं।'

तत्पश्चात् उसने व्यापारी तथा उसके दोनों गवाहों को आदेश दिया कि 'मैं जिस-जिस को बुलाता जाऊं, वह मेरे पास आता जाए।' व्यापारी अपने गवाहों को लेकर वहाँ से कुछ दूर हट गया। पहले उस ग्वाले ने ब्राह्मण को अपने पास बुलाया और उससे सारी बातें सुनीं। उसके बाद उसने व्यापारी के साथ आए गांव के मुखिया को संकेत से अपने पास बुलाकर पूछा - 'मुखिया जी, आप व्यापारी के गवाह हैं। मुझे बताइए कि जो रत्न व्यापारी ने ब्राह्मण की पत्नी को लौटाए थे, वे किस रंग के और कितने बड़े थे?'

यह सुनकर मुखिया के चेहरे का रंग उड़ गया। उसने कांपते स्वर में बताया- 'महाराज, वे रत्न नीबू के आकार के थे। उनका रंग नीला था।'

'ठीक है', ग्वाला बोला - 'अब तुम एक ओर खड़े हो जाओ।'

ग्वाले के आदेशानुसार मुखिया उस व्यापारी और मंदिर के पुजारी से अलग हट कर खड़ा हो गया।

इस बार ग्वाले ने मंदिर के पुजारी को बुलाया और उससे भी यही प्रश्न पूछा तो मंदिर के पुजारी ने बताया - 'महाराज, वे रत्न मटर के दाने जितने बड़े थे। उनका रंग लाल था।'

ग्वाले के चेहरे पर विजयदायिनी चमक पैदा हो गई। उसने पुजारी को भी एक ओर खड़ा करा दिया और व्यापारी को अपने पास बुला लिया।

'क्यों रे बेईमान', उसने व्यापारी को डांटा - 'झूठ बोलता है? एक गरीब ब्राह्मण को धोखा देना चाहता है। बता, कितने पैसे दिए थे इन दोनों को झूठी गवाही देने के लिए?'

व्यापारी थर-थर कांपने लगा। वह ग्वाले के पैरों पर गिर पड़ा और याचना भरे स्वर में बोला - 'मुझे क्षमा कर दीजिए, महाराज। मुझसे बहुत भारी भूल हो गई।'

'तो फिर निकाल कर दे इस ब्राह्मण के तीनों रत्न', ग्वाला दहाड़ा। व्यापारी ने फौरन अपने अंगरखे की गांठ खोली और उसमें बंधे तीनों रत्न निकालकर ब्राह्मण को दे दिए। ब्राह्मण को उसके रत्न देकर, व्यापारी जैसे ही अपने गवाहों के साथ जाने को तैयार हुआ, तभी राजा भोज ने आगे बढ़कर उनका मार्ग रोक लिया। वह कड़कते स्वर में बोले 'ठहरो व्यापारी। तुम इतनी आसानी से यहां से नहीं जा सकते। इस ग्वाले ने तुम्हारे साथ सिर्फ न्याय किया है। तुमने और तुम्हारे साथियों ने जो झूठ बोला है, उसकी सजा तुम्हें नहीं दी। वह सजा अब तुम्हें हम देंगे।'

'कौन? महाराज!' राजा भोज को पहचान कर व्यापारी और उसके दोनों गवाह थर-थर कांपने लगे। वहां मौजूद अन्य लोग भी चौंक उठे। तभी भीड़ में छिपे राजा के कई सादे वेशधारी सिपाही आगे बढ़े, व्यापारी और उसके दोनों साथियों को पकड़ लिया।

राजा भोज का नाम सुनकर वह ग्वाला भी टीले से नीचे उतर आया और भयभीत भाव से एक ओर खड़ा हो गया। राजा भोज उस ग्वाले के समीप पहुंचे और मुस्कराते हुए उससे बोले - 'भयभीत मत हो। हम तुम्हारा न्याय देखकर बहुत प्रसन्न हैं। सचमुच तुमने दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया है। तुम हमसे कहीं ज्यादा न्यायशील हो। परंतु एक बात हमारी समझ में नहीं आ रही है।'

'कौन-सी बात महाराज?' ग्वाले ने पूछा।

'तुम एक अनपढ़ आदमी हो। उम्र भी तुम्हारी कोई विशेष नहीं है। फिर ऐसे निर्णय कैसे कर लेते हो?'

ग्वाले ने उत्तर दिया - 'महाराज, मैं इस टीले पर आकर बैठता हूं तो पता नहीं मुझमें कहां से न्याय करने की शक्ति आ जाती है और तब मुझे झूठ और सच दोनों आमने-सामने खड़े दिखाई पड़ने लगते हैं। बस, मैं तुरंत अपना निर्णय सुना देता हूं।'

'ओह!' ग्वाले की बात सुनकर राजा भोज सोच में पड़ गए। 'निश्चय ही इस टीले के अंदर कोई अदृश्य शक्ति है जो इस ग्वाले को न्याय करने के लिए प्रेरित करती है। मुझे अपने राजज्योतिषियों से इस विषय में विचार-विमर्श करना चाहिए।'

दूसरे दिन राजा भोज ने राज्य के प्रमुख विद्वानों तथा ज्योतिषियों को दरबार में आमंत्रित किया और उनसे टीले के बारे में पूछा। तब राजज्योतिषी ने उन्हें बताया - 'महाराज, ऐसा लगता है, उस मिट्टी के टीले के नीचे कोई चमत्कारी चीज दबी हुई है। आप उस टीले की खुदाई करवाएं।'

राजज्योतिषी का परामर्श मानकर राजा ने वैसा ही किया। सैकड़ों मजदूर टीले की खुदाई के काम में जुट गए।

काफी खुदाई के बाद अचानक मजदूरों को एक

राजसिंहासन धरती में दबा दिखाई दिया। उन्होंने यह बात अपने पदाधिकारी को बताई तो उसने इसकी सूचना तुरंत राजा भोज को भिजवा दी।

सूचना पाकर राजा भोज स्वयं वहां पहुंचे और बड़ी सावधानीपूर्वक वह सिंहासन बाहर निकलवाया। उन्होंने अपने राजज्योतिषी से उस सिंहासन के बारे में पूछा। सिंहासन की बनावट देखकर राजज्योतिषी ने बताया - 'महाराज, यह सिंहासन मानवों द्वारा निर्मित नहीं हो सकता। यह या तो किसी पराक्रमी दैत्य या दानव का हो सकता है या फिर किसी देवता का।'

सचमुच वह सिंहासन कारीगरी का श्रेष्ठतम नमूना था। ठोस सोने के बने उस सिंहासन में जगह-जगह बेशकीमती रत्न जड़े हुए थे। उसके चारों ओर आठ-आठ पुतलियां बनी हुई थीं जो अपने हाथों में एक-एक कमल का फूल लिये हुए थीं। सिंहासन बहुत दिनों से धरती के गर्भ में दबा हुआ था। इस कारण उस पर धूल-मिट्टी की अनेक परतें जम गई थी, किंतु जहां-जहां से धूल-मिट्टी हट गई थी, वहां से उसकी भव्यता को स्पष्ट देखा जा सकता था।

राजा ने उस सिंहासन को ठीक करवाया। उसकी सफाई करवाई तो सिंहासन ऐसे दमक उठा कि उस पर नजरें टिकानी मुश्किल हो गईं।

जो भी देखता, बस देखता ही रह जाता। उसकी पुतलियां तो ऐसी लगने लगीं, जैसे अभी बोल उठेंगी। राजा ने उस सिंहासन पर बैठने के लिए ज्योतिषियों से शुभ मुहूर्त निकलवाया और निश्चित तिथि तथा समय पर उस सिंहासन के पास जाकर खड़े हो गए। उन्होंने सिंहासन की पहली सीढ़ी पर चढ़ने के लिए अपना दायां पैर आगे बढ़ाया। तभी एक चमत्कार हो गया। उस सिंहासन में लगी सभी पुतलियां एक साथ खिलखिलाकर हंस पड़ीं।

यह देखकर सभी लोग आश्चर्यचकित हो गए। सब लोग विस्मय से उन पुतलियों को देखने लगे और सोचने लगे कि ये बेजान पुतलियां हंसीं किस तरह?

राजा भोज ने घबराकर अपना बढ़ा हुआ पैर पीछे खींच लिया और फिर पुतलियों से पूछा - 'बताओ, ए पुतलियों, सच-सच बताओ कि तुम कौन हो? और हंसी किसलिए?'

तब पहली पुतली, जिसका नाम रत्नमंजरी था, सिंहासन से बाहर निकली और राजा भोज से बोली - 'राजन, आप बड़े तेजस्वी, बुद्धिमान, शक्तिशाली और धनवान हैं। परंतु यह सिंहासन जिस राजा का है वह आप से कहीं अधिक तेजस्वी, बुद्धिमान, शक्तिशाली और ऐश्वर्यशाली था। हां, एक गुण में वह आपसे कम था और वह यह कि वह आपकी तरह अभिमानी नहीं था।'

अपने लिए ऐसे शब्द सुनकर राजा भोज को क्रोध चढ़ आया। गुस्से से भड़कते हुए वे बोले - 'तुमने मुझे अभिमानी कहा। मैं अभी इस सिंहासन को मिट्टी में मिलाए देता हूं।'

पुतली पुनः खिलखिला उठी। वह मुस्कराते हुए बोली - 'बस, इतना ही तो अंतर है राजा विक्रमादित्य और आप में। चक्रवर्ती सम्राट होते हुए भी राजा विक्रमादित्य को अभिमान छू तक नहीं गया था और आप अपने बारे में थोड़ी-सी सच्चाई जानकर भी आग बबूला हो उठे। नहीं राजन! आप इस सिंहासन पर बैठने के अधिकारी नहीं हैं।' राजा भोज को तुरंत अपनी गलती का अहसास हुआ। उन्होंने नम्र स्वर में पूछा - 'ए पुतली, तुम्हारी पहेली मेरी समझ में नहीं आई। मुझे स्पष्ट बताओ कि तुम कहना क्या चाहती हो?'

'तो सुनो राजा भोज,' रत्नमंजरी नामक वह पुतली बोली - 'मैं तुम्हें इस सिंहासन के बारे में बताती हूं। सुनकर निर्णय कर लेना कि तुम क्यों इस सिंहासन पर बैठने के अधिकारी नहीं हो।'

इतना कहकर पुतली ने बताना आरंभ किया।

पहली कहानी

देवताओं का सिंहासन

बहुत पहले आर्यावर्त में एक राज्य था अंबावती। उस राज्य का राजा गंधर्वसेन था, जो वर्ण व्यवस्था में विश्वास नहीं रखता था। राजा गंधर्वसेन ने चारों वर्णों की स्त्रियों के साथ चार विवाह किए थे। उसकी ब्राह्मण वर्ण की पत्नी से उसे ब्राह्मणीत नामक पुत्र पैदा हुआ। क्षत्रिय वर्ण की पत्नी ने तीन पुत्रों को जन्म दिया, जिनमें बड़े का नाम शंख, उससे छोटे का नाम विक्रमादित्य तथा सबसे छोटे का नाम भर्तृहरि था। वैश्य वर्ण की रानी से चंद्र नामक पुत्र हुआ और शूद्र वर्ण की रानी ने जिस पुत्र को जन्म दिया, उसका नाम धन्वंतरि था। ब्राह्मण वर्ण की रानी से उत्पन्न ब्राह्मणीत जब वयस्क हो गया तो राजा ने उसे राज्य का दीवान बना दिया। उस समय राज्य में बहुत अव्यवस्था फैली हुई थी, जिससे घबराकर ब्राह्मणीत ज्यादा दिन तक दीवान का पद न संभाल सका और एक दिन राज्य से बाहर चला गया। इधर-उधर भटकता वह धारा नगरी में जा पहुंचा, जहां तुम्हारे पूर्वज राज करते थे। किसी प्रकार जोड़-तोड़ करके ब्राह्मणीत ने तुम्हारे पूर्वज के दरबार में स्थान प्राप्त कर लिया और फिर मौका लगते ही एक दिन तुम्हारे पूर्वज का वध करके सत्ता हथिया ली। कुछ वर्ष बाद उसके मन में उज्जैन लौटने का विचार आया। वह उज्जैन लौटा, किंतु वहां पहुंचते ही उसकी मृत्यु हो गई।

ऐसी स्थिति में ब्राह्मणीत का छोटा भाई विक्रमादित्य राजगद्दी का अधिकारी बना। वह एक चतुर, शक्तिशाली और न्यायप्रिय शासक था। उसने राज्य की बिगड़ती व्यवस्था को काबू में किया और अपने व्यवहार से प्रजा को पूरी तरह संतुष्ट कर लिया। इस प्रकार सच्चे अर्थों में वह एक प्रजापालक राजा बन गया।